10. दिल्ली सल्तन

मध्यकालीन भारत

दिल्ली सल्तनत (1206-1526)	क्षेत्रीय राज्य	मुगल (1526-1707)
गुलाम वंश	विजयनगर	बाबर
खिलजी वंश	बहमनी	हुमायूँ
तुगलक वंश	मालवा	अकबर
सैय्यद वंश	गुजरात	जहांगीर
लोदी वंश	बंगाल	शाहजहां
		औरंगजेब

महमूद गज़नी/ मुहम्मद गौरी

- भारत पर प्रथम आक्रमण मुहम्मद बिन कासिम ने किया।
- महमूद गजनी ने पहला आक्रमण 1000 ई. में किया।
- महमूद गजनी ने 1025 ई॰ में सोमनाथ मंदिर को लूटा।
- मुहम्मद गौरी ने 1192 ई॰ में तराइन के युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को हराकर भारत में तुर्क शासन की स्थापना की। गौरी का पहला आक्रमण 1175 ई. में मुल्तान के विरुद्ध किया।
- गजनी के दरबार में अलबरूनी, फिरूदौली, उत्बी तथा फारूखी रहते थे।

सल्तनत काल

गुलाम वंश (1206 - 1290)

कुतमबुद्दीन ऐबक :

- गुलाम वंश का संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक था।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपनी राजधानी लाहौर में बनाई।
- नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त करने वाला बख्तियार खिलजी था।
- ऐबक को लाख बख्श (लाखों का दान देने वाला) कहा जाता था।
- कुतुबमीनार का निर्माण ऐबक ने शुरू करवाया।
- सल्तनत काल की राज भाषा फारसी थी।
- कुब्बत उल-इस्लाम मस्जिद तथा अजमेर में ढाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिद का निर्माण ऐबक ने करवाया।
- ऐबक की मृत्यु 1210 ई॰ में चौगान खेलते समय घोड़े से गिरकर हो गयी। इसे लाहौर में दफनाया गया।

इल्तुतमिश

- इल्तुतमिश ने राजधानी को दिल्ली स्थानांतरित किया।
- मकबरों का निर्माण सर्वप्रथम इल्तुतमिश ने ही कराया।
- इल्तुतमिश ने शुद्ध अरबी सिक्के चलाये – चाँदी का टंका एवं तांबे का जीतल।
- इल्तुतमिश ने इक्ता व्यवस्था को लागू किया। इसने मंगोलों का सामना अप्रत्यक्ष रूप से किया।
- इल्तुतमिश ने तुर्कान-ए-चिहलगानी का निर्माण किया। (चालीस गुलाम सरदारों का संगठन)

रजिया

- दिल्ली सल्तनत की पहली महिला शासिका रजिया सुल्तान थी।
- राजिया ने याकूत को अमीर -ए-अखूर नियुक्त किया।
- रजिया ने पर्दा प्रथा का त्यागकर पुरुषों की तरह चोगा एवं कुलह को पहनना शुरू किया।
- रजिया की शादी अल्तुनिया से हुई।
- नाइब का पद बदरामशाह ने शुरू किया।

बलबन

- तुर्कान-ए-चिहगानी का विनाश बलबन ने किया।
- यह गुलाम वंश का सबसे शक्तिशाली शासक था।
- बलबन ने लौह एवं रक्त नीति को अपनाया।
- बलबन तुर्कान -ए- चिहालगानी का हिस्सा था।

- सिजदा एवं पैबोस की प्रथा बलबन ने शुरू की।
- मंगोलों को रक्षा के लिए सैन्य विभाग दीवान-ए-आरिज की स्थापना बलबन ने की।
- बलबन ने फारसी रीति-रिवाज पर आधारित नौरोज उत्सव को प्रारंभ किया।
- इसने कुरान के नियम को शासन का आधार बनाया।
- गुलाम वंश का अंतिम शासक शम्मुदीन क्यूमर्स था।

खिलजी वंश (1290-1320 ई.)

- जलालुद्दीन खिलजी ने खिलजी वंश की स्थापना की तथा किलोखरी को अपनी राजधानी बनाया।
- जलालुद्दीन खिलजी की हत्या उसके भतीजे अली गूरशास्प (अलाउद्दीन खिजली) ने की।
- दक्षिण भारत पर प्रथम मुस्लिम आक्रमण जलालुद्दीन खिलजी ने किया था।

अलाउद्दीन खिलजी

- बचपन का नाम–अली गूरशास्प
- इसने सैनिको को नकद वेतन देना शुरू किया। व स्थायी सेना रखने की प्रथा शुरू की।
- इसने विद्रोहों को रोकने के लिए चार अध्यादेश जारी किये।
- इसने बाजार नियंत्रण प्रणाली की शुरूआत की।
- प्रत्येक बाजार शहना-ए-मंडी के अंतर्गत था।
- इसने घोड़ो को दागने एवं सैनिकों को हुलिया रखने की प्रथा की शुरूआत की।
- दक्षिण भारत अभियान के लिए मलिक काफूर को भेजा।
- अमीर खुसरो अलाउद्दीन का दरबारी कवि था। इसने सितार एवं तबले का अविष्कार किया।
- आलाई दरवाजा का निर्माण अलाउद्दीन खिलजी ने किया।
- अमीर खुसरो को तुती-ए-हिन्द (भारत का तोता) के नाम से भी जाना जाता है। इसने कव्वाली, तबला, सितार का विकास किया।
- अलाउदीन ने राशनीग व्यवस्था भी प्रारम्भ की।

नाजिर	–	नाप तौल अधिकारी
शहना ए मंडी	–	बाजार का अधीक्षक
बरीद	–	घुमकर बाजार का निरीक्षण
मुनहियान	–	गुप्त सूचना
मुहतासिब	–	सेंसर अधिकारी

सबसे ज्यादा मंगोलो का आक्रमण अलाउदीन के समय में हुआ था।

- अलाउदीन खिलजी की व्यापारीक नीति की जानकारी बरनी की कृति तारीख–ए– फिरोशाही से मिलती हे।
- विस्वाह भूमि मापन की ईकाइ थी।
- दिवान एंव मुस्तकराज राजस्व विभाग था।

कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी

- इसे नग्न स्त्री-पुरुष की संगत पसंद थी।
- इसने स्वयं को **खलीफा** घोषित किया।

तुगलक वंश

- संस्थापक- गाजी मलिक (गयासुद्दीन तुगलक)
- नहर निर्माण करने वाला प्रथम शासक गयासुद्दीन तुगलक था।
- इसने सबसे अधिक बार मंगोल आक्रमण विफल किया।
- गयासुद्दीन तुगलक ने दिल्ली के समीप तुगलकाबाद नामक नगर की स्थापना की। इसे छप्पन कोट के नाम से जाना जाता है।
- दक्षिण भारत के किसी राज्य को पहली बार दिल्ली सल्तनत में मिलाया।
- गयासुद्दीन तुगलक के संदर्भ में निजामुद्दीन औलिया का कथन है– "दिल्ली दूर है"।
- गयासुद्दीन के बाद जौनखाँ (मुहम्मद बिन तुगलक) शासक बना।

मुहम्मद बिन तुगलक

- सभी सुल्तानों में सर्वाधिक शिक्षित एवं योग्य व्यक्ति था।
- अपनी सनक भरी योजनाओं के कारण इसे पागल बादशाह भी कहा जाता है।
- दौलताबाद को कुतुबुल इस्लाम भी कहते है।
- इसने राजधानी को दिल्ली से दौलताबाद स्थानन्तरित किया।
- इसने कृषि के विकास के लिए दीवान-ए-कोही नामक विभाग की स्थापना की।
- इसने सांकेतिक मुद्रा चलायी। जो कांसे की थी।
- मुहमम्द बिन तुगलक के शासनकाल में दक्षिण में विजय नगर और बहमनी साम्राज्य की स्थापना हुई।
- इन्होने चॉदी का सिक्का ''अदली'' चलाया था।
- जैन संत जीनप्रभाशुरी से इनके सम्बध थे।
- तकावी कृषि ऋण को कहते थे।

- मुहम्मद बिन तुगलक के काल में सर्वाधिक विद्रोह (34 बार) हुऐ जिनमें अधिकांशत दक्षिण भारत में हुऐ।
- मोरक्को यात्री इब्नबतुता भारत आया। इसे दिल्ली का काजी नियुक्त किया गया।
- इब्नबतुता की पुस्तक का नाम **रेहला** है।
- मुहम्मद तुगलक के बारे में कथन है– "राजा को प्रजा से मुक्ति मिली और प्रजा को राजा से।"
- तुगलक वंश का अंतिम शासक नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह था। इसी के समय तैमूर लंग का आक्रमण हुआ।
- मुहम्मद एक कवि व संगीत प्रेमी था। वह हिन्दुओं के त्यौहार होली आदि में भाग लेता था।
- मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु 1351 में थट्टा में हुई।
- इन्होने सुल्तान की सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद का निर्माण किया, जिसे मजलिस-ए-खलवत कहा गया।

फिरोजशाह तुगलक

- फिरोज तुगलक ने नगरकोट के प्रसिद्ध ज्वालामुख मंदिर को लूटा।
- 300 संस्कृत ग्रंथों का फारसी अनुवाद ''दलाल-ए-फिरोजशाही'' है।
- प्रथम मुस्लिम शासक जिसने जजियां को खराज से अलग किया।
- इनकें शासनकाल में रिश्वत को बढ़ावा मिला था।
- फिरोज शाह तुगलक– ने अपने शासनकाल में 24 करो को समाप्त किया सिर्फ खराज, खम्स, जजिया, जकात को छोड़कर।
- इसने इस्लामिक पद्धति के द्वारा प्रचलित चार करों को छोड़कर अन्य करो को समाप्त कर दिया।
- इसने ब्राह्मणों पर भी जजिया लगाया।
- इसने सिंचाई कर 10% लगाया।
- इन्होंने शशगनी नामक सिक्का चलाया।
- इसके द्वारा निर्मित्त नगर– हिसार, फिरोजाबाद, फतेहाबाद, फिरोजपुर, जौनपुर।
- सल्तनतकालीन सुल्तानों में दासों की सर्वाधिक संख्या फिरोज के शासनकाल में थी।
- इसके द्वारा स्थापित विभाग–
  - दीवान-ए-खैरात – दान विभाग
  - दीवान-ए-बंदगान – दास विभाग
- दीवान-ए-इस्तिफाक – पेंशन विभाग
- इसने अपनी आत्मकथा फुतूहात-ए-फिरोजशाही के नाम से लिखी।
- इसने चांदी एवं तांबे के मिश्रण से निर्मित्त सिक्के जारी किये, जिसे **अद्धा** एवं **बिख** कहा जाता था।
- इसने दिल्ली में कोटला-ए-फिरोजशाही दुर्ग का निर्माण किया।

सैय्यद वंश (1414-1451 ई.)

- संस्थापक– खिज्र खां (रैय्यत-ए-आला की उपाधि) जो तैमूरलंग का सेनापति था।
- याहिवा-बिन-अहमद-सरहिन्दी को संरक्षण मुबारक शाह ने दिया।
- सैय्यद वंश का अंतिम शासक अलाउद्दीन आलमशाह था।

लोदी वंश (1451-1526 ई.)

- संस्थापक– बहलोल लोदी। यह सरहिन्द का गवर्नर था।
- प्रथम अफगान राज्य का संस्थापक बहलोल लोदी था।
- सिंकदर लोदी ने आगरा शहर की स्थापना की तथा राजधानी बनाया।
- भूमि मापन के लिए गज-ए-सिकन्दरी का प्रचलन कराया।
- सिकन्दर ने जौनपुर को अपने शासन में मिलाया था।
- लोदी वंश का अंतिम शासक इब्राहीम लोदी था।
- पानीपत के प्रथम युद्ध (1526) में बाबर ने इब्राहीम लोदी को पराजित किया।

सल्तनतकालीन शासन व्यवस्था

- मुशरिफ - ए- मुमालिक – महालेखाकार
- काजी -उल् - कजात – सर्वोच्च न्यायाधिकारी
- वकील -ए- दर – सुल्तान की देखभाल
- खासखेल – सुल्तान की स्थायी सेना
- मंगलीक तथा अर्राद – बारूद का गोला फेकने वाली मशीन

विभाग		संबंध
दीवान-ए-विजारत	–	वजीर/ प्रधानमंत्री
दीवान-ए-आरिज	–	सैन्य विभाग
दीवान-ए-इंशा	–	पत्र-व्यवहार विभाग
दीवान-ए-रसालत	–	विदेश विभाग
भद्र-उस-सुदूर	–	धार्मिक विभाग

- सिकन्दर लोदी के आदेश पर संस्कृत के एक आयुर्वेद ग्रंथ का फारसी में **फरहगें सिकन्दरी** नाम से अनुवाद करवाया।

- जजिया – गैर मुस्लिमों से वसूला जाने वाला कर
- जकात – मुस्लिमों से लिया जाने वाला धार्मिक कर
- उस्र – मुस्लिमों से लिया जाने वाला भूमि कर
- खुम्स – लुट का धन

पुस्तक	रचयिता
तारिखे - ए- यमिनी	उत्बी
सियासतनामा	तुसी
नूह सिपीहर	अमीर खुसरो
किताब–उल–हिन्द	अलबरूनी
ताज-उल-मासिर	हसन निजामी
तबकाते नासिरी	मिनहाज उल सिराज
खजाईन-उल-फुतुह	अमीर खुसरो
तुगलकनामा	अमीर खुसरो
किताब-उल-रेहला	इब्नाबतुता
तारीख-ए-फिरोजशाही	जियाउद्दीन बरनी
चचनामा	अबुकूकी
शाहनामा	फिरदौसी
देवल रानी	अमीर खुसरो

- इक्ता प्रथा को अलाउदीन ने समाप्त किया।
- जहांपनाह नगर (दिल्ली) का निर्माण मुहम्मद तुगलक ने किया।

सल्तनत कालीन स्थापत्य कला

- इस कला शैली को 'इण्डो-इस्लामिक' स्थापत्य कला शैली कहा गया। सल्तनत काल में पहली बार वैज्ञानिक ढंग से मेहराब एवं गुम्बद का प्रयोग किया गया। यह कला भारतीयों ने अरबों से सीखी। तुर्क सुल्तानों ने गुम्बद और मेहराब के निर्माण में शिला एवं शहतीर दोनों प्रणालियों का उपयोग किया।

गुलाम तथा खिलजी काल

- **कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद–** 1192 में तराइन के युद्ध में पृथ्वी राज चौहान के हारने पर उसके किले 'राय पिथौरा' पर अधिकार कर वहाँ पर 'कुव्वत-उल-इस्लाम' मस्जिद का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने करवाया। इण्डो-इस्लामिक शैली में निर्मित्त स्थापत्य कला का यह पहला ऐसा उदाहरण है जिसमें स्पष्ट हिन्दू प्रभाव परिलक्षित होता है।
- फिरोज तुगलक की सभी इमारतों में कमल के फुलों का प्रयोग किया गया है।
- **कुतुब मीनार–** दिल्ली के मेहरौली गांव में स्थित है। ऐबक ने इसका निर्माण कार्य प्रारम्भ कराया। परन्तु एक मंजिल के निर्माण के बाद ही उसकी मृत्यु हो गई। बाद में इसकी शेष मंजिलों का निर्माण इल्तुतमिश ने करवाया। कुतुब मीनार का निर्माण ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में कराया गया।
- **अढाई दिन का झोपड़ा–** कुतुबुद्दीन ऐबक ने अढाई दिन का झोपड़ा, जो वास्तव में एक मस्जिद है, का निर्माण अजमेर में करवाया।
- **नासिरुद्दीन महमूद का मकबरा या सुल्तान गढ़ी–** तुर्क सुल्तानों द्वारा भारत में निर्मित यह पहला मकबरा था इसलिए इल्तुतमिश को मकबरा निर्माण शैली का जन्मदाता भी कहा जाता है। इस मकबरे का निर्माण इल्तुतमिश ने नासिरुद्दीन महमूद की याद में करवाया। सुल्तान गढी का मकबरा प्रथम सल्तनतकालीन मकबरा था।
- **इल्तुतमिश का मकबरा–** 1235 में इल्तुतमिश द्वारा मकबरे की दीवारों पर कुरान की आयतें खुदी हैं। इसमें स्क्रीन शैली का प्रयोग हुआ है।
- **अलाई दरवाजा–** अलाउद्दीन खिलजी द्वारा 1310-11 में। इसके गुम्बद में पहली बार विशुद्ध वैज्ञानिक विधि का प्रयोग। अलाई दरवाजा के साज-सज्जा में बौद्ध तत्वों के मिश्रण का आभास होता है।

तुगलक काल

- तुगलक काल सादगी एवं विशालता पर अधिक जोर।
- **तुगलकाबाद–** गयासुद्दीन तुगलक द्वारा निर्मित्त। यह रोमन शैली में निर्मित्त है। इस दुर्ग को छप्पनकोट के नाम से भी जाना जाता है।
- **कोटला फिरोजशाह–** फिरोजशाह तुगलक द्वारा इस दुर्ग का निर्माण कराया गया।

लोदी काल

- **बहलोल लोदी का मकबरा–** 1418 में सिकंदर लोदी द्वारा।
- **सिंकदर लोदी का मकबरा–** इब्राहिम लोदी द्वारा 1517 में बनाया गया।
- **मोठ की मस्जिद–** सिंकदर लोदी के वजीर द्वारा बनाई गई।
- लोदी काल को मकबरों का काल भी कहते है।
- मेहराव का प्रचलन सर्वप्रथम बलबन के मकबरे से ही प्रारंम्भ हुआ था।

सल्तनत कालीन सैन्य व्यवस्था

- इल्तुतमिश द्वारा स्थापित सेना को **हश्म-ए-कल्ब** (केन्द्रीय सेना) या **कल्ब-ए-सुल्तानी** कहा जाता था। इल्तुतमिश के समय में सामन्तों व प्रान्तपतियों की सेना को **'हश्म-ए-अतराफ'** कहा जाता था। शाही घुड़सवार सेना को **सवार-ए-कल्ब** कहा जाता था। सल्तनत कालीन सेना मुख्यत: तीन भागों में विभक्त थी–
  1. घुड़सवार सेना
  2. गज (हाथी) सेना
  3. पदाति (पैदल) सेना।
- मंगोल सेना के वर्गीकरण की दशमलव प्रणाली को सल्तनत कालीन सैन्य व्यवस्था का आधार बनाया गया।

10 अश्वारोही	–	1 सर-ए-खेल
10 सर-ए-खेल	–	1 सिपहसालार
10 सिपहसालार	–	1 अमीर
10 अमीर	–	1 मलिक
10 मलिक	–	1 खान
मांगलिक तथा अरदि	–	गोला फेंकने की मशीन
चर्ख	–	शिला प्रक्षेपास्त्र
फलाखून	–	चलायमान मंच
सवल	–	सुरक्षित गाड़ी

- "साहिब-ए-वडीद-ए-लश्कर विभाग' युद्ध के समय की समस्त जानकारी राजधानी भेजता था।
- तले-अद एवं यज्की नामक गुप्तचर शत्रु की सेना की गतिविधियों की सूचना एकत्र करता था।
- सल्तनत काल में अच्छी नस्ल के घोडे, तुर्की, अरब एवं रूस से मंगाये जाते थे। हाथी मुख्यत: बंगाल से प्राप्त होते थे।

न्याय तथा दण्ड व्यवस्था

- सुल्तान राज्य का सर्वोच्च न्यायाधीश होता था। इस समय इस्लामी कानून शरीयत, कुरान एवं हदीस पर आधारित था।
- **मुस्लिम कानून के चार स्रोत–**

कुरान	–	मुस्लिम कानून का मुख्य स्रोत
हदीस	–	पैगम्बर के कार्यों एवं कथनों का उल्लेख
इजमा	–	व्याख्यायित कानून
कयास	–	तर्क के आधार पर विश्लेक्षित कानून

दण्ड व्यवस्था

फिकह	–	मुस्लिम दण्ड विधि
जिहाद	–	धर्म युद्ध
दारूल-हर्ब	–	काफिरों का देश
दारूल-इस्लाम	–	इस्लाम का देश

वित्त विभाग

- सल्तनत कालीन वित्त व्यवस्था सुन्नी विधिविज्ञों की हनीकी शाखा के वित्त सिद्धान्तों पर आधारित थी।
- **जकात–** मुसलमानों से लिया जाने वाला धार्मिक कर। यह आय का 2.5 प्रतिशत लिया जाता था। इस कर का सम्पूर्ण भाग मुसलमानों के कल्याण पर खर्च किया जाता था।
- **उश्र–** केवल मुसलमानों से लिया जाने वाला यह कर भूमि की उपज पर लिया जाता था। यह कर प्राकृतिक साधनों से सिंचित भूमि की उपज का 1/10 भाग तथा मनुष्यकृत साधनों से सिंचित भूमि की उपज का 1/5 भाग लिया जाता था।
- **जजिया–** गैर-मुसलमानों से वसूले जाने वाला कर। इस कर से स्त्रियां, बच्चे, भिखारी एवं लंगड़े मुक्त थे। फिरोज तुगलक ने इसे ब्राह्मणों पर भी लगाया। यह कर सम्पन्न वर्ग से 40 टंका, मध्यम वर्ग से 20 टंका एवं सामान्य वर्ग से 10 टंका प्रतिवर्ष लिया जाता था।
- **खराज–** गैर-मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमि कर। यह उपज का 1/3 से 1/2 तक वसूला गया।
- **खम्स–** लूट का धन। इस धन का 1/5 भाग राजकोष में तथा 4/5 भाग सैनिकों में बांटा जाता था। अलाउद्दीन ने इसे पलट दिया।
- **सदकन–** धार्मिक कर।
- **बटाई–** लगान निर्धारित करने की एक प्रणाली।
- जब तैयार फसलों की माप-तोल के आधार पर कर का निर्धारण किया जाता था तो उसे बटाई, किस्मत-ए-गल्ला, गल्ला बक्शी व हासिल कहा गया। सल्तनत काल में तीन प्रकार की बंटाई प्रचलन में थी–
  1. खेत बटाई– खड़ी फसल के आधार पर
  2. लंक बटाई– खेत काटने के बाद खलिहान में लाये गये अनाज से भूसा निकालने के पूर्व।
  3. रास बटाई– अनाज से भूसा अलग करने के बाद।
- सल्तनत काल में राज्य की समस्त भूमि 4 वर्गों में विभक्त थी–

खालसा भूमि	–	केन्द्र के नियंत्रण में
इक्ता भूमि	–	देखभाल मुक्ति द्वारा

सामन्तों की भूमि – अधीनस्थ हिन्दू सामन्त केअधीन

इनाम व वक्फ – कर मुक्त भूमि

- अलाउद्दीन के समय भूमि कर को 50 प्रतिशत कर दिया गया।
- अलाउद्दीन एवं मुहम्मद तुगलक ने भूमि की पैमाइश के आधार पर लगान को निर्धारित किया।

स्थान	**प्रसिद्धि**
आगरा	नील
बनारस	सोने, चांदी, जरी का काम
अन्हिलवाड़	व्यापारियों के तीर्थस्थल
देवल	बन्दरगाह
सरसुती	चावल
सतगांव	रेशमी रजाई

EduBull.com